मरीज़ की बीमार पुरसी और बीमारी के सवाब का बयान

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

एक हज़ार मुन्तखब हदीसे मिश्कात शरीफ हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

नोट : नीचे दी गई तमाम रिवायते, हदीष का खुलासा है.

{01} हज़रत अली (रदी) से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- जो मुसलमान किसी मुसलमान की सुबह के वकत बीमार पुरसी करता (बीमारी का हाल पूछता) हे उसके हक मे शाम तक सत्तर हज़ार फरिश्ते इस्तिगफार करते रहते हे, और अगर शाम के वकत बीमार पुरसी करता हे तो सुबह तक उसके हक मे फरिश्ते इस्तिगफार करते रहते हे, और जन्नत मे उसके लिये बाग (तैयार कर दिया जाता) हे. (तिर्मिज़ी, अबू दाउद)

{02} हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रदी) से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- जो मुसलमान किसी

मुसलमान की बीमार पुरसी करता हे और सात बार यह दुआ पढता हे-

असअलुल्लाहल अज़ीम रब्बल अरशिल अज़ीमि अंय यशफीयक.

तरजुमा:- मे अल्लाह बडाई वाले से सवाल करता हु जो अर्शे अज़ीम का रब हे कि वह आपको शिफा अता फरमाये. अगर उसकी मौत का वकत न आ पहूंचा हो तो उस मरीज़ को शिफा हासिल हो जाती हे. (अबू दाउद, तिर्मिज़ी)

{03} हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर (रदी) से रिवायत हे कि रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- जब बीमार पुरसी के लिये जाओ तो बीमार के पास यह दुआ पढो- अल्लाहुम्मशफि अब्दक, तरजुमा:- ऐ अल्लाह! अपने बन्दे को शिफा अता फरमाईये. (अबू दाउद)